वर्ष 23, अंक 3, Sr. 406, मुंबई, मार्च 2024, पन्ने 24 कीमत रु. 5/-

॥ श्रीमद् प्रेम-रामचन्द्र-भद्रंकर-महोदय-पुण्यपाल-वज्रसेन-हेमभूषणसूरिभ्यो नमः ॥

बीसवीं सदी के महान् योगी पू. पंन्यास प्रवर श्री **भद्रंकरविजयजी** गणिवर्य एवं उन्ही के
कृपापात्र चरम शिष्यरत्न जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर पू. आचार्यदेव
श्रीमद् विजय **रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** के चिंतनों को प्रसारित करने वाला मुखपत्र

अर्हद् दिव्य-संदेश

तलासरी ध्वजारोहण
दि. 14-2-2024

भिलाड में प्रवेश दि. 20-2-2024

परिकर अंजन-शलाका
दि. 21-2-2024

भिलाड से करंवेला चैत्यपरिपाटी दि. 22-2-2024

गुरु गुण कीर्तन

''चौथा कर्मग्रंथ'' विमोचन
दि. 22-2-2024

-: संपादक एवं प्रकाशक :-

सुरेन्द्र जैन, C/o. दिव्य संदेश प्रकाशन Office No. 304, 3rd Floor, बे व्यु बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002. M. 8484848451 Correspondance Whatsapp only, Website : Divyasandesh.online

पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय **रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** विवेचित

प्रातः स्मरणीय-महापुरुष भाग-1 & 2

खुली किताब परीक्षा
OPEN BOOK EXAM

महापुरुषों के जीवन का हो अनुसरण, दोष मुक्त हो जाएगा आचरण,
सम्यग् गुणों का हो जाएगा संचरण. बन जाएगा नर से नारायण ।

प्रथम प्रज्ञावान Rs. 9,000
द्वितीय बुद्धिमान Rs. 7,000
तृतीय ज्ञानवान Rs. 5,000
तथा अन्य प्रोत्साहन इनाम

प्रश्न पुस्तिका वितरण प्रारम्भ
ता. 1-3-2024
उत्तर पुस्तिका जमा करने की अन्तिम
ता. 1-3-2025
परिणाम ता. 1-5-2025

-: संकलक :-
सोनाली पारस बोरा

प्रश्न पुस्तिका वितरण प्रारम्भ
ता. 1-3-2024
उत्तर पुस्तिका जमा करने की अन्तिम
ता. 1-9-2025
परिणाम ता. 1-11-2025

पेपर सहित पुस्तक मूल्य 600/- रुपए प्रचार हेतु परीक्षा पेपर सहित मूल्य 300/- रुपए

-: प्राप्ति स्थान :-

(1) दिव्य संदेश प्रकाशन, C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor, बे.व्यु. बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002. M. 9892069330, Cell 8484848451 (only whatsapp)

(2) ललित टी. जैन, चंदन एजेंसी, 607, चीरा बाजार, मुंबई-400 002. M. 9820303451

(3) प्रवीण गुरुजी, C/o. श्री आत्म कमल लब्धिसूरि, जैन पुस्तकालय, श्री आदिनाथ जैन टेंपल, चिकपेठ, बेंगलोर-560 053. M. 9036810930

उत्तर पुस्तिका भेजने का पता

पी. बोरा एंड जैन, 215, गोल्ड मोहूर बिल्डींग, 174, प्रिंसेस स्ट्रीट, मुंबई-400 002.

रत्न संदेश

लेखक : **प्रवचन प्रभावक पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

499 शाश्वत सुख

आत्मा के शाश्वत आनंद
और परम सौंदर्य का
अनुभव करना हो तो
देह के क्षणिक
सौंदर्य को छोड़ना ही होगा ।
क्षणिक के त्याग बिना
शाश्वत की प्राप्ति
कभी संभव ही नहीं है ।
अत: देह के रागी न बनकर
आत्मा के रागी बने ।

500 युवापीढ़ी

आज की युवापीढ़ी को
तीन 'D' की आवश्यकता है–
(1) Dedication समर्पण भाव
(2) Discipline अनुशासन
(3) Determination दृढ़ निश्चय
जीवन में ये तीन गुण आ जायें तो
आज का युवक अपने जीवन को
उन्नति के शिखर तक पहुँचा सकता है ।
सचमुच, जिसकी जवानी सुधर गई,
उसका सब कुछ सुधर गया ।

1.	PLACE OF PUBLICATION	: MUMBAI.
2.	PERIODICITY OF IT'SPUBLICATION	: MONTHLY.
3.	PRINTER'S NAME	: **SOMANI PRINTING PRESS**
	NATIONALITY	: INDIAN
	ADDRESS	: Gala No.3-4, Amin Ind. Estate, Sonawal Cross Road No.2, Goregaon (E), Mumbai-400 063. (Maharashtra)
4.	PUBLISHER'S NAME	: **SURENDRA JAIN**
	NATIONALITY	: INDIAN
	ADDRESS	: Office No.304, 3rd floor, Bay Vue Building, Wing-East Bay, Dr.M.B.Velkar Street,Kalbadevi, Mumbai-400002. (Maharashtra)
5.	EDITOR'S NAME	: **SURENDRA JAIN**
	NATIONALITY	: INDIAN
	ADDRESS	: Office No.304, 3rd floor, Bay Vue Building, Wing-East Bay, Dr.M.B.Velkar Street,Kalbadevi, Mumbai-400002. (Maharashtra)
6.	NAME AND ADDRESS OF OWNER	: **DIVYA SANDESH PRAKASHAN (REGD. TRUST)**
		: Office No.304, 3rd floor, Bay Vue Building, Wing-East Bay, Dr.M.B.Velkar Street,Kalbadevi, Mumbai-400002. (Maharashtra)

I, **SURENDRA SOHANRAJJI JAIN,** HERE BY DECLARE THAT THE PARTICULARS GIVEN ABOVE ARE TRUE TO THE BEST OF MY KNOWLEDGE & BELIEF.

DATE : 15-03-2024 PLACE : MUMBAI.

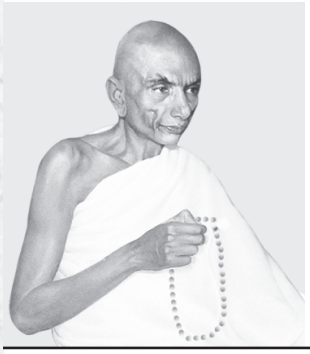

ऐसे थे गुरुदेव हमारे

बीसवीं सदी के महान योगी, नमस्कार महामंत्र के अजोड साधक, निःस्पृह शिरोमणि, **प्रशांतमूर्ति पूज्यपाद पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी गणिवर्य**

संपादक : **जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी महाराज**

108

महामंगलमूर्ति पंन्यासश्री भद्रंकरविजयजी

–मोहनराज जैन, पूर्व विधायक बाली एवं अध्यक्ष, राजस्थान भूदान-ग्रामदान बोर्ड, जयपुर

ग्राम लुणावा में ही घटित उस अनमोल घड़ी (करीब आधा घंटा) के व्यापक और गहरे प्रभाव की अमिट छाप मैं भूल नहीं सकता । हुआ यूं कि राजस्थान सरकार के एक वरिष्ठ अधिकारी जो स्वयं श्रीमद् भगवद्गीता के प्रकाण्ड पंडित थे, उन दिनों बाली आये हुए थे और उन्होंने मेरे सामने सन्त-समागम की इच्छा व्यक्त की । उनके मन में था कि परसराम महादेव तीर्थ पर एक बंगाली विद्वान् साधु रहते हैं, उनसे वार्तालाप करेंगे । उनकी इच्छा प्रकट होते ही मैंने कहा, ''**पहले हम लुणावा चलें-वहाँ भी एक महान् विद्वान् जैन संत का चातुर्मास है ।**''

साथ ही मैंने कहा, ''**कुछ दिनों पूर्व ही उनके बाली-आगमन पर मेरे द्वारा उनके अभिनन्दन के समय कहे गये शब्दों के उत्तर में उन्होंने जो उद्गार प्रकट किये, उससे मैं बड़ा ही प्रभावित हुआ हूँ ।**'' इतना सुनते ही वे तत्क्षण लुणावा चलने को तैयार हो गये और दोपहर में विश्राम के क्षणों में जब गुरुदेव अपनी शिष्य-मण्डली से आध्यात्मिक चर्चा कर रहे थे, तब हम सीधे ही उनके कक्ष में पहुँच गये । स्वभावानुसार मुस्कान भरे चेहरे से उन्होंने हमें पास ही बैठने को कहा । मैंने जयपुर से पधारे उन सज्जन का परिचय दिया । लम्बे-लम्बे हाथ-पाँव वाले, 6 फुट से अधिक लम्बी पर दुबली-पतली काया धारण किये, ये संत शान्त और प्रसन्न मुद्रा में पाट पर बैठे थे । संक्षिप्त प्रारम्भिक चर्चा के बाद गीता के श्लोकों के आधार पर शंका-जिज्ञासा, श्रद्धा-विश्वास पर आधारित प्रश्न किये । संक्षिप्त प्रारम्भिक चर्चा के बाद पूज्य गुरुदेव ने गीता के ही कई श्लोक उद्धृत कर न केवल शंकाओं का समाधान किया वरन् उन्हें शंका और जिज्ञासा के भेद को समझाकर श्रद्धा और विश्वास के मजबूत आधार पर विचार-जगत् में आगे बढ़ने का महत्त्व भी बताया । जिस सहज और सरल वाणी में वार्तालाप हुआ, उससे हम सभी बड़े आनन्दित ही नहीं, धन्य भी हुए ।

वैसे तो मैंने श्री पार्श्वनाथ जैन विद्यालय, वरकाणा में अध्ययन करते समय सामायिक, प्रतिक्रमण व अन्य सूत्रों का अर्थ सहित अध्ययन कर कई धार्मिक परीक्षाएँ पास की

थी, पर पूज्य गुरुदेव के सम्पर्क में आने के बाद गुरुदेव की पुस्तक **'नमस्कार महामन्त्र'** और **'समत्वयोग की साधना'** पढ़कर मुझे जो जानकारी मिली, उससे जान पड़ा कि इन प्रारम्भिक ज्ञान के विषयों से भी मैं कितना अनभिज्ञ था । उनकी साहित्य साधना अनूठी थी । गूढ़ से गूढ़ रहस्य भरे आध्यात्मिक विषयों पर भी सरल भाषा और सरल शैली में लिखकर समझाने की उनमें अद्‌भुत कला थी और ऐसी ही थी मनमोहने वाली वात्सल्य एवम् अपनत्व से भरपूर उनकी वार्तालाप शैली । **जो एक बार कुछ क्षणों के लिए ही सम्पर्क में आया वह जीवन भर के लिए समर्पित हो गया, ऐसा था उनका आकर्षक और प्रभावशाली व्यक्तित्व ।**

गोड़वाड़ की धरती का अहोभाग्य समझिए कि पूज्य गुरुवर की लम्बी अवधि तक इस क्षेत्र में विहार होता रहा । इसमें कुछ हद तक उनकी शारीरिक अस्वस्थता कारण बनी हो, क्योंकि यहाँ की सुखी जलवायु उनके लिए अधिक उपयोगी रही, पर मूल रुप में यहाँ के लोगों की श्रद्धा और भक्ति ने ही उन्हें इस धरती से जोड़े रखा । यहाँ के लोग आज भी उस महान् व्यक्तित्व के धनी, त्याग की मूर्ति और प्रकाण्ड विद्वान् का पुण्य स्मरण कर नेत्रों के अश्रु-जल से उनके चरणों से पावन हुई भूमि को प्रक्षालित कर अपने आपको धन्य मानते हैं ।

109

देहातीत पंन्यासजी म.सा.

–डॉ. सेवंतिलाल जैन-पाटण

'पूज्य पंन्यासजी म. किसी व्यक्ति के नहीं, वे समस्त विश्व के थे, ऐसा कहूँ तो गलत नहीं है ।'

''देह छतां जेनी दशा, वर्ते देहातीत ।
ते ज्ञानीना चरणमां, वंदन हो अगणित ।''

ऐसे महात्मा पाटण की भूमि में विराजमान थे, यह अपना परम सौभाग्य था ।

वे देह दशा में रहे होने पर भी देहातीत अवस्था में जीए थे । जिस ध्यान मार्ग का जैन शासन में महत्त्व का स्थान हैं, आज उस मार्ग की उपेक्षा दिखाई दे रही है । पूज्य पंन्यासजी म. ध्यान व भक्तिमार्ग के प्रबल स्रोत थे ।

18 वर्ष पूर्व पाटण के चातुर्मास में उनका परिचय-संपर्क हुआ था ।

इस वर्ष का संसर्ग, मौन संसर्ग रहा । **परंतु उनकी आंखों में ही एक ऐसा आकर्षण था कि जो देखे, उसका हृदय भक्ति से झुके बिना न रहे । इसका मुख्य कारण था, उनके हृदय में मैत्री व करुणा भाव का अमृत था ।**

हम तो सोचते कुछ है और करते कुछ और है । मैं दिवंगत आत्मा से यही प्रार्थना करता हूँ कि उनके जैसी पवित्रता हमारे तन-मन में पैदा हो । जिस महा पुरुष के अणु-अणु में महामंत्र का गुंजन था । हृदय की प्रत्येक धड़कन में परमात्मा का स्मरण था । उनके रक्त के परिभ्रमण में अर्हं का नाद था । ऐसे महान् गुरुदेव के वियोग से मेरा सर्वस्व

लूंटा गया...मेरा जीवन शून्य बन गया ।

परंतु जिस प्रकार प्रभु का निर्वाण भी जगत् के कल्याण के लिए ही था, निर्वाण द्वारा प्रभु ने शाश्वत जीवन प्राप्त किया, बस, उसी प्रकार स्वर्ग-गमन द्वारा भी गुरुदेव आगे ही बढे है । दुर्भाग्य है कि वियोग की उस वेला में मैं उपस्थित नहीं रह सका ।

वि.सं. 2013 में सर्व प्रथम इस महापुरुष के दर्शन हुए । आत्मानुभाव इस काल में शक्य हैं और उसके लिए ध्यान योग की प्रक्रिया जिनागमों में विद्यमान है । उस साधना मार्ग को उन्होंने अपने जीवन में आत्मसात् किया था ।

ऐसे महापुरुष के गुणानुवाद के लिए शब्द ही नहीं है । फिर भी कुछ प्रसंगों को मैं जीवन में भूल नहीं सकता ।

बेड़ा (राज.) में गुणानुवाद का प्रसंग था । उस समय ऋषभदास स्वामीज (मद्रासवाले) पूज्य गुरुदेव के पास आए । वे स्वयं साधक थे । प्रतिदिन एकाशना करते थे । 45 वर्ष से साधना कर रहे थे । आत्मानुभाव के लिए वे अनेक योगियों के पास घूम आए...परंतु कहीं भी उनकी जिज्ञासा शांत नहीं हुई । आखिर में वे गुरुदेव के पास आए । घंटों तक उन्होंनें अपने अनुभव की बातें गुरुदेव के सामने रखी । अंत में पूज्य गुरुदेव श्री ने स्याद्वाद शैली से समझाया । उन्होंने पूज्य श्री को **'गुरु'** के रुप में स्वीकार किया ।

यहां से थोडी दूरी पर बिराजमान पू. अभयसागरजी म. जो स्वयं नवकार महामंत्र के साधक हैं उनके पास गया तो वे कहने लगे...पूज्य साहेबजी के कालधर्म के समाचार सुनकर मैं बेहोश हो गया । मेरे तो आधार स्तंभ थे । सं. 2005 में पूज्य पंन्यासजी म. का मिलन हुआ था । उन्होंने मुझे मंत्र दीक्षा प्रदान की थी ।

पूज्यपाद श्री का मुझ पर जो उपकार हैं, 'उसका बदला चूकाने में मैं असमर्थ ही हूँ । उन्होंनें तो अमृत रस का पान कराया है ।'

(क्रमशः)

जनवरी 2024 से दिसंबर 2024 तक दिव्यसंदेश मासिक के वार्षिक सहयोगी

मुख्य-सहयोगी

- **अ.सौ. सायरबाई बसंतीलालजी हस्तीमलजी चोपडा-बाली-निगडी**
- **एक सद्गृहस्थ कांदिवली-बाली**

सहयोगी

- **शा. महेशकुमार मोहनलालजी राणावत दुजाणा-कुर्ला**
- **स्व. बदामीबाई चम्पालालजी राठोड़ (हस्ते राकेशभाई) बाली, ईरोड़**
- **मुनि स्थूलभद्रविजयजी की प्रेरणा से अ.सौ.मंजुला हसमुखलालजी महेता-मुंडारा-भायंदर**

पूज्यश्री से पत्र सम्पर्क : प.पू. आचार्य श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

1) C/o. सुरेन्द्र जैन, Office No. 304, 3rd Floor, बे.व्यु. बिल्डींग, विंग-ईस्ट बे, डॉ. एम.बी. वेलकर स्ट्रीट, कालबादेवी, मुंबई-400 002. Cell 8484848451 (only whatsapp)

कर्म को नहीं शर्म
(भीमसेन-चरित्र)

(गतांक से आगे)

लेखक : प.पू.आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

12. तप-प्रारंभ !!

कहावत है–``खुदा जब देता है तो छप्पर फाड़कर देता है और खुदा जब लेता है तब थप्पड़ मार कर लेता है ।''

पुण्य का पवन अनुकूल हो तो नहीं मांगी वस्तुएँ सामने से आ जाती है । आपत्ति भी संपत्ति में बदल जाती है और दुश्मन भी मित्र बन जाते हैं...परन्तु पुण्य का पवन अनुकूल न हो तो मित्र भी दुश्मन बन जाते है और सारी अनुकूलताएँ भी प्रतिकूलताओं में बदल जाती है ।

भीमसेन के जीवन में अब तक पुण्य का पवन प्रतिकूल था । अतः वह ज्यों-ज्यों प्रयत्न करता, त्यों-त्यों उसे असफलता ही मिलती । जिस संपत्ति को पाने के लिए वह खून पसीना एक करता, वह संपत्ति ही हाथ ताली देकर कहीं दूर चली जाती, परंतु अब पुण्य के पवन ने पलटा खाया, अब तक जो प्रतिकूल पवन था, वह अब अनुकूल हो गया । अब उसके जीवन में सारी संपत्तियाँ सामने से आलोटने के लिए तैयार हो गईं ।

विजयसेन व भीमसेन पैदल ही राजमहल की ओर आगे बढ़ रहे थे । तभी एक वृक्ष पर बैठा बंदर जोर से आवाज करने लगा और चंद क्षणों में ही वह बंदर कपड़े की छोटी पोटली लेकर वहाँ आ गया । उसने वह पोटली भीमसेन के चरणों में फेंक दी !...भीमसेन उस पोटली को पहिचान गया । वह अपने दोनों हाथों से उस पोटली को उठाने लगा ।

भीमसेन जैसे ही उस बंदर के द्वारा फेंकी गई गंदी पोटली को उठाने लगा त्योंही विजयसेन राजा एकदम चौंक उठे और बोले, **``महाराज ! आप यह क्या कर रहे हो ?''**

``विजयसेन ! इस पोटली के पीछे तो मेरे जीवन का करुण इतिहास छिपा हुआ है ।'' इतना कहकर भीमसेन ने वह पोटली जिसमें कीमती रत्न बँधे हुए थे, उसका करुण इतिहास विजयसेन राजा को सुना दिया ।

पोटली के पीछे रहे करुण इतिहास को सुनकर विजयसेन राजा भी स्तब्ध हो गया और बोला, ``उस समय तुम्हारे पुण्य का पवन प्रतिकूल था तो लाख प्रयत्न करने पर भी तुम उस पोटली को प्राप्त न कर सके और आज...बिना प्रयास के ही वह सामने से मिल गई । यह पुण्य की ही तो बलिहारी है ।''

भीमसेन ने कहा, ``आपकी बात बिल्कुल ठीक है । उसी दिन मुझे ये रत्न मिल गए होते तो मुझे अपने जीवन में दुःख के दिन देखने नहीं पड़ते ।''

भीमसेन व विजयसेन राजा राजमहल की ओर धीरे-धीरे आगे बढ़ रहे थें, तभी एक जटाधारी तापस जोर-जोर से चिल्लाने लगा, ``बचाओ ! बचाओ ! मुझसे यह वेदना सहन नहीं हो रही है, मेरे किए अपराध का परिणाम मैं स्वयं भुगत रहा हूँ ।''

अचानक भीमसेन की नजर उस ओर पड़ी । भीमसेन उस जटाधारी तापस को पहिचान गया । भीमसेन ने सैनिकों को आदेश दिया कि उस तापस को यहाँ ले आओ ।

भीमसेन की आज्ञा होते ही उस तापस को वहाँ लाया गया । भीमसेन ने उसे नमस्कार किया और उसकी क्षेम कुशलता पूछी । अचानक आँखों की ओर नजर करने पर भीमसेन को पता चला कि वह तापस अंधा हो गया है ।

भीमसेन ने कहा, ``आपकी आँखें कैसे चली गई ?''

वह तापस भीमसेन की आवाज को पहिचान गया, अतः बोला, ``बंधुवर्य ! मेरे पाप का फल मुझे मिल गया है । मैंने तुम्हारे साथ जो माया की, उसी का कटु परिणाम मेरे जीवन में आया है । **जो दूसरों का बुरा करता है, वास्तव में उसी का बुरा होता है–**इस सनातन सत्य को मैं भूल गया और स्वार्थ के वशीभूत होकर आपको कुछ भी दिए बिना सारा स्वर्ण रस मैंने ले लिया, उसी का कड़वा फल आज मुझे मिल गया है ।''

``बंधुवर्य ! आप मुझे क्षमा करें और वह सुवर्ण–रस स्वीकार कर मुझे कृतार्थ करें ।''

क्षमावीर भीमसेन ने उस तापस को क्षमा कर दिया । कर्म की कैसी विचित्रता है–एक दिन वही भीमसेन धन के लिए उस तापस के पैरों में गिर रहा था और आज वही तापस भीमसेन के चरण छूने के लिए तैयार हो गया ।

भीमसेन ने कहा, ``महात्मन ! जो कुछ हो गया उसे तुम भूल जाओ । अपने अपराध के बदले तुम्हारे दिल में जो पश्चात्ताप की आग पैदा हुई है वही तुम्हारी अंतरंग योग्यता का सूचक है । सुबह का भूला शाम को घर लौट जाए तो वह भूला नहीं कहलाता है । भूल हो जाना मानव स्वभाव है, परन्तु उस भूल को स्वीकार कर लेना यही दैविक गुण है ।''

तापस ने कहा, ``मैंने आपका अपराध किया है अतः आप यह स्वर्ण रस स्वीकार कर मुझे कृतार्थ करें ।''

यद्यपि भीमसेन को सुवर्ण रस की कोई चाह या जरुरत नहीं थी परन्तु तापस की प्रसन्नता के खातिर ही उन्होंने सुवर्ण रस लेना स्वीकार किया ।

उस तापस ने वह सुवर्ण रस भीमसेन को सौंपने का निर्णय लिया और तत्क्षण तापस के जीवन में एक नया आश्चर्य पैदा हुआ–उसकी खोई हुई आँखें उसे पुनः प्राप्त हो गई । हर्ष से उसका मन मयूर नाच उठा ।

(क्रमशः)

हृदय प्रदीप

लेखांक-11

विवेचनकार : **मरुधर रत्न पू.आचार्य देव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**
नवोदित लेखक **मुनिश्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा.**

'आत्मानुभव के तीन लक्षण'

अर्थोह्यनर्थो बहुधा मतोऽयम्, स्त्रीणां चरित्राणि शवोपमानि ।
विषेण तुल्या विषयाश्च तेषां, येषां हृदि स्वात्मलयानुभूतिः ।।11।।

शब्दार्थ

अर्थो=धन-सम्पत्ति, **हि**=वास्तव में, **अनर्थ**:=विपत्ति का कारण है, **बहुधा**=अनेक प्रकार से, **मत**:=आत्मानुभवी द्वारा माना गया है, **अयम्**=यह, **स्त्रीणां**=नारिओं का, **चरित्राणि**=आचरण, **शवोपमानि**=मृत देह की उपमावाला है, **विषेण तुल्या**=तत्त्काल मरण देनेवाले जहर के समान है, **विषया: च**=और पांच इन्द्रियों के शब्द, रुप, गंध, रस और स्पर्श रुप पांच विषय, **तेषां**=उनको, **येषां**=जिनके, **हृदि**=दिल में, **स्वात्मलयानुभूति**:=अपनी आत्मा में लीनता का अनुभव हुआ है ।

गाथार्थ

जिनके हृदय में अपनी आत्मा में लीनता का अनुभव हुआ है, उनको धन-सम्पत्ति रुप अर्थ अनेक प्रकार के अनर्थ का कारण लगता है, स्त्रिओं का आचरण मृतदेह के समान लगता है और पाँच इन्द्रियों के विषय तत्काल मरणदायी विष के समान लगते है ।

विवेचन

पिछले श्लोकों में दु:ख मुक्ति का उपाय और उसके लिए विवेकज्ञान की आवश्यकता बताई । इस उपदेश का आचरण करके जिसके जीवन में आत्मलीनता का अनुभव हुआ है उनके लक्षण इस श्लोक में बताए है ।

ग्रंथकार पुन: इस श्लोक में आत्मिक वैद्य बनकर आत्मानुभव के तीन लक्षण बता रहे है ।

जैसे किसी को जहर उतारने की दवाई देकर कुशल वैद्य उसे नीम के कडवे पत्ते खिलाकर परीक्षा करता है । यदि दर्दी नीम के कडवे पत्ते सहजता से खा लेता है, तो वैद्य समझ लेता है कि इसका जहर

नहीं उतरा और यदि दर्दी नीम के पत्ते मुंह में डालते ही थू-थू करे, अरुचि बताए तो वैद्य समझ लेता है कि इसका जहर उतर गया है ।

वैसे ही जिसने अपनी आत्मा के सच्चे स्वरुप को समझा है, उसकी रागोद्पादक पदार्थों के प्रति दृष्टि बदल जाती है । ग्रंथकार इस श्लोक में तीन परीक्षा बता रहे है ।

1) उसे अर्थ अनेक अनर्थ का कारण लगता है ।

2) उसे स्त्रियों का चरित्र शव के समान लगता है ।

3) उसे पांच इन्द्रियों के विषय तीव्रघाती विष के समान लगते है ।

वास्तव में देखा जाए तो जगत् में ये तीनों बाते बिल्कुल सत्य है । जिसको आत्मा की अनुभूति हुई है, उसे अपनी आत्मा के भीतर रहे अनंत गुणों में ही सुख का अनुभव होता है । अपनी आत्मा के भीतर रहे नि:सीम आनंद में वह इतना मशगुल होता है कि उसमें विक्षेपकारी सभी पदार्थ विषम विष के समान लगते है । ज्ञानसार ग्रंथ में महोपाध्याय श्री यशोविजयजी भी कहते है–

'यस्य ज्ञान सुधासिन्धौ परब्रह्मणि मग्नता । विषयान्तर संचार-स्तस्य हालाहलोपम: ।।'

अर्थात्–जिसे परब्रह्म रुपी ज्ञानामृत महासागर में मग्नता प्राप्त हुई है, उसे अन्य विषय में प्रवेश करना तीव्र विष के समान लगता है ।

परंतु, मोह की विषमता है कि वह हमें आत्मलय में मग्न ही नहीं होने देता है । हमारा मन सुअर की तरह अर्थ और काम के कीचड में ही लीन होना चाहता है ।

○ एक बार नारदजी किसी मार्ग से जा रहे थे । बीच मार्ग में बडी गट्टर थी । सारे गांव की गंदगी के एकस्थान उस गट्टर में कई सुअर डूबे हुए थे । गंदगी में रहे उन सुअरों को देख नारदजी को दया आ गई । उन्होंने सुअरों को कहा **''मुझ से तुम्हारी यह दुर्दशा देखी नहीं जाती । चलो, मैं तुम्हें स्वर्ग में ले जाता हूँ ।''**

नारदजी की बात सुनकर एक सुअर ने पूछा–**''स्वर्ग में क्या है ?''**

''अरे, ''स्वर्ग में तो रंगबिरंगे सुंदर खुश्बुदार फूलों से भरे बाग-बगीचे है । मनमोहक अप्सराओं के गीत-गान-नृत्य है । अपार धन संपत्ति है । स्वादिष्ट भोजन है । मीठे जल से भरी नदियाँ, तालाब और फव्वारे है ।'' इस प्रकार नारदजी स्वर्ग में रही अलौकिक वस्तुओं का वर्णन कर रहे थे, परंतु सुअरों में से किसी एक के चेहरे पर भी कोई खुशी या आश्चर्य नजर नहीं आ रहा था ।

यह देखकर नारदजी ने अंत में कहा-इस जगत् में ऐसा कुछ भी नहीं है, जो स्वर्ग में न हो । क्या तुम्हे अभी भी कुछ कमी लग रही है ?

सुअर बोला–क्या ऐसी गट्टर स्वर्ग में है ?

'छी ! ऐसी गंदी गट्टर ! ना रे बाबा ना ! ऐसी गट्टर तो स्वर्ग में नहीं है ।' नारदजी बोले ।

तो हमे आपके स्वर्ग से कोई काम नहीं है, हम तो यही परम सुखी है । बिचारे नारदजी, क्या बोले ? चुप चाप वहा से चले गए ।

वास्तव में इस संसार में अपनी हालत भी उस सुअर जैसी है । ज्ञानी भगवंत की नजर में हम सभी संसारी जीव पांच इन्द्रियों के भोग के कीचड में खेल रहे है । इस कीचड में रहते वे हमारी दुर्दशा को अच्छी तरह जानते है । उन्हें हमारी इस स्थिति पर दया आती है । वे चाहते है कि हम भी भोग के कीचड में से बाहर निकल कर सदा आनंद दायी मोक्ष में जाए । हमारे आत्मोद्धार के लिए वे संसार की भयंकरता और मोक्ष सुख की भद्रंकरता बताते हुए सतत धर्मोपदेश देते है, परंतु हम भी सुअर की तरह उन्हें यही प्रश्न करते है कि **''मोक्ष में क्या है ?''**

मोह के काले चश्मे पहनने के कारण **'मोक्ष में अनंत आनंद है'**–इस बात पर विश्वास ही नहीं होता । मात्र धन और पांच इन्द्रिय के विषय भोग में ही सुख नजर आता है । इसलिए हमारे जीवन का अमूल्य समय धन कमाने में बीत जाता है ।

धन कमाने के बाद पांच इन्द्रियों के विषय भोग में जीवन का अमूल्य समय चला जाता है । पत्नी और परिवार के भरण-पोषण में धन का अधिकाधिक व्यय हो जाता है । परंतु धर्म की इच्छा नहीं होती ।

वास्तव में धन, स्त्री और विषयों का विष कितना खतरनाक है यह समझना खूब जरुरी है । पंचतंत्र नाम के लौकिक ग्रंथ के इस दृष्टांत से हम इस बात को अच्छी तरह समझ सकते है–

एक मठ में देवशर्मा नाम का संन्यासी रहता था । उसके भक्तगण मूल्यवान वस्त्र आदि भेंट लाकर देते थे । भेंट आये वस्त्रों में से सुंदर वस्त्रों को बेचने से उसके पास बहुत धन इकट्ठा हो गया । अपना धन चोरी न हो जाय इसलिए उसने धन की पोटली बनाकर दिन-रात बगल में दबाए रखता था । हमेशा सर्तक रहकर धन की रक्षा करता था ।

एक दिन आषाढभूति नाम के ठग ने उसे देखा । धन की पोटली देखकर उसने चोरी करने का मन बना लिया । मठ के आस-पास की बडी दिवारों पर चढने का प्रयत्न किया परंतु निष्फल रहा । अन्य उपाय भी सभी निष्फल गए । अंत में उसने संन्यासी का शिष्य बनकर ठगाई करने का निश्चय किया । विनय और नम्रता का ढोंग करते हुए दण्डवत् प्रणाम करके बोला–**'हे भगवन् ! यह संसार असार है । जीवन क्षण भंगुर है । विषय का भोग भयंकर है । इसलिए मैं संसार सागर पार उतरना चाहता हूँ । अत: आप बताइए मैं क्या कर सकता हूँ ?'**

नवयुवक ठग की वैराग्य भरी मीठी-मीठी बाते सुनकर संन्यासी ने बडे आदर और प्रेम के साथ उसे उत्तर दिया–**'हे वत्स ! तुम धन्य हो ! तुम्हें इतनी छोटी उम्र में वैराग्य हुआ है । वृद्धावस्था में इन्द्रियों के शिथिल होने के बाद वैराग्य होना आसान है परंतु भर जवानी में हुआ वैराग्य ही सच्चा वैराग्य है । यदि तुम संसार पार करना चाहते हो तो शिवमंत्र से दीक्षित होकर भस्म ओर रुद्राक्ष धारण करके साक्षात् शिव स्वरुप बन जाओ ।'**

संन्यासी का उपदेश सुनकर ठग बोला-**'हे भगवन् ! कृपा करके आप ही मुझे दीक्षित करके अपना शिष्य बना लो ।''**

संन्यासी बोला–**'हे वत्स ! मैं तुझे एक शर्त पर दीक्षित करुंगा-तुम रात को इस मठ में प्रवेश नहीं कर सकोगे । तुम्हें मठ के दरवाजे पर कुटिया बनाकर रातभर सोना होगा ।''**

ठग बोला–**''जैसी आपकी आज्ञा । आपकी आज्ञा पालन करने में ही मेरा आत्महित रहा है ।''** इस प्रकार मीठा बोलकर वह ठग, संन्यासी का शिष्य तो बन गया, परंतु उसका मन तो उस धन की पोटली में था । चोरी के इरादे से वह देवशर्मा संन्यासी की हाथ-पैर दबाकर सेवा करता है । तेल-मालिस करता है । विश्वास पैदा करने का प्रयत्न करता है । परंतु देवशर्मा उस पर विश्वास किये बिना हमेशा पोटली को अपनी बगल में दबाए रखता है ।

बहुत समय के बाद भी जब उसे चोरी करने का अवसर नहीं मिला तब वह ठग उसे मारने का विचार करने लगा । अचानक एक दिन भाग्य-योग से अन्य शिष्य ने दूसरे गाँव से आकर आमंत्रण देते हुए बोला-हे भगवन् ! शिवजी का पवित्रारोपण महोत्सव संपन्न करने आप हमारे गाँव पधारे ।

निमंत्रण प्राप्त कर देवशर्मा संन्यासी अपने शिष्य आषाढभूति को लेकर उस गाँव की ओर चला । बीच में एक नदी आयी । स्नान करने की इच्छा से संन्यासी ने धन की पोटली निकालकर अपने वस्त्र में छिपाकर स्नान आदि शुद्धि के लिए आषाढभूति से कहा **''वत्स ! मैं शौच के लिए जा रहा हुँ, जब तक वापस न आऊँ तब तक इन वस्त्रों को, जिसमें शिवजी की मूर्ति रखी है उसकी सावधानी से रक्षा करना ।''**

गुरु की आज्ञा को तहत्ति करके वह आषाढभूति खूब प्रसन्न हो गया । देवशर्मा कुछ दूर चला गया, तब वह उस धन की पोटली लेकर भाग गया । वह अपने नापाक इरादे में कामयाब हुआ ।

इधर देवशर्मा संन्यासी ने रास्ते में एक आश्चर्य देखा । वन में चरते हुए भेडों के झुण्ड में दो भेडों को लडते हुए देखा । वे दोनों भेड क्रोध से दूर तक पीछे हटकर बडी वेग से वापस आकर अपने शिरों से टक्कर मारते थे । दोनों के मस्तकों से बहुत-सा खून गिरता था । रसना के स्वाद में लुब्ध एक गीदड़ उनके लडने की जगह में भीतर घुस कर खून पीता था ।

इस आश्चर्य को देखकर देवशर्मा मन ही मन विचार करने लगा–**''अहो ! यह गीदड कितना मुर्ख है । इन दोनों की टक्कर की चपेट में आकर कदाचित् मर भी सकता है ।''** जीभ के स्वाद में लुब्ध होकर यह अपने जीवन को जोखिम में डाल रहा है । इस प्रकार वह विचार कर ही रहा था कि सच में वह गीदड दोनों भेडों की टक्कर के बीच में आकर तुरंत ही मर गया । गीदड की इस दशा को देखकर मन ही मन में शोक करता हुआ वापस लौटता है । जैसे ही वह अपने स्थान पर पहुँचता है, आषाढभूति को गायब देखकर आश्चर्य चकित हो जाता है । वहाँ पडे अपने कपडों में धन की पोटली ढूंढता है, परंतु

वह पोटली तो ठग चुराकर भाग चुका था । अपनी पोटली गायब देखकर रोता हुआ, मूर्च्छित होकर जमीन पर गिर पड़ा । कुछ देर बाद होश में आकर जोर जोर से आषाढभूति को आवाज देता है । विलाप करते हुए उसने आषाढभूति के पदचिन्हों को खोज कर उस दिशा में आगे बढा ।

शाम तक चलते-चलते वह एक गाँव में पहुँचा । उसी समय एक किसान अपनी पत्नी के साथ पास के गाँव में जा रहा था । देवशर्मा थक चुका था । उसे आराम करने के लिए योग्य स्थान चाहिए था । किसान को देखकर **''हे भद्र ! सूर्यास्त के इस समय मैं तुम्हारे अतिथि के रुप में आया हूँ । अत: मेरा अतिथि सत्कार करके पुण्य कमा लो ।''**

संन्यासी देवशर्मा की बात सुनकर किसान ने उसे प्रणाम किया और अपनी पत्नी को बोला–**''हे प्रिये ! तूं इस अतिथि को घर ले जा । इनके स्नान, भोजन, शयन आदि की व्यवस्था कर । मैं पास के गांव से मदिरा लेकर आता हूँ ।''** ऐसा कहकर किसान पास के गांव की ओर चला गया ।

किसान की पत्नी संन्यासी को साथ लेकर घर की ओर चली । घर पहुँचकर देवशर्मा संन्यासी को टूटी-सी खाट देकर कहने लगी-**'हे भगवन् ! जल्दी से मैं अपनी सखी से मिलकर आती हूँ, तब तक आप मेरे घर की रखवाली करे ।'** ऐसा कहकर अपना श्रृंगार करके अपने यार के पास जाने लगी ।

व्यभिचारी स्त्री सुंदर, विद्वान, मनोनुकूल प्रिय पति, हवेली, मखमली-गद्दी-तकिये आदि सुख की सामग्रियों को छोड़कर जंगल, शुन्यघर, अंधकार स्थान आदि में जाकर उबड-खाबड काँटो वाली जगह में पर पुरुष के साथ व्यभिचार करने में अधिक सुख का अनुभव करती है । बुरी आदत से लाचार रहती है ।

जैसे ही किसान की पत्नी अपने यार के पास जाने लगी, उसी समय शराब के नशे में चकचूर होकर उसका पति अपने घर लौटा । उसे आते देखकर वह दौड़कर वापस घर आ गयी । अपने श्रृंगार को दूर कर दिया । किसान ने उसकी हरकत देखकर और पूर्व में लोगों से सुनी अपनी पत्नी के व्यभिचार की बातों को याद कर खूब क्रोधित हुआ । गुस्से से वह अपनी पत्नी को डांटने लगा । अरे व्यभिचारिणी ! तेरे व्यभिचार की बाते बहुत दिनों से सुन रहा था, आज अपनी आँखों से देखकर उन कलंकों की बातों पर विश्वास हो गया है । आज तुझे दण्ड देता हूँ । ऐसा कहकर उसे डण्डे से पीटकर खम्भे से बांधकर वह किसान सो गया ।

कुछ देर बाद उसकी सखी ने आकर कहा, **'हे सखि ! तुम्हारा यार संकेत स्थल में तेरी प्रतीक्षा कर रहा है । अत: जल्दी जा ।'**

उसने कहा–हे सखि ! मेरी हालत तो देख । खम्भे से बँधी वहाँ कैसे जाऊँ ?

सखी बोली, 'देख, तेरा पति नशे में चूर है, इसलिए सुबह तक तो नहीं जगेगा । अत: मैं तेरे बन्धनों को खोल देती हूँ । तूं अपनी जगह मुझे बांध दे और जाकर जल्दी आ जा ।' सखी की बात मानकर वह जल्दी से यार के पास चली गई ।

कुछ देर बाद किसान का नशा कुछ उतर गया । वह उठकर सखी को ही अपनी पत्नी समझकर उसे कहने लगा-'प्रिये ! आज से यदि तू ऐसा काम नहीं करेगी तो तुझे बंधन से खोल देता हूँ ।' परंतु वह सखी यदि कुछ बोले तो किसान उसे पहिचान लेता, इसलिए चूप रही । बार-बार पुछने पर भी जब वह कुछ नहीं बोली, तब गुस्से में आकर किसान ने उसका नाक काट लिया । किसान फिर से सो गया । इतने में किसान की पत्नी वापस लौटी ! सखी ने उसे नाक काटने आदि की सभी हकीकत बताई । उसने सखी के बंधन खोलकर अपने आप को खम्भे पर बांध दिया । और अपना मुंह साडी से छिपा दिया । सखी अपने घर चली गई ।

रात बीती, दिन उगा । किसान का नशा उतर गया । वह जगा । खम्भे पर बँधी पत्नी को देखकर पुनः क्रोधित होकर चिल्लाने लगा । **''बोल, आज से ऐसा काम कभी नहीं करेगी न ।''**

तब सतीत्व को ढोंग करते हुए हाथ जोडकर प्रार्थना करती हुई बोली–**''हे क्षेत्र देवता ! हे परमात्मा ! यदि मैंने अपने मन से भी परपुरुष की इच्छा न की हो, तो मेरी पवित्रता सिद्ध करने के लिए, रात को पति का काँटा हुआ मेरा नाक वापस आ जाए ।''**

ऐसा कहकर उसने अपना घुंघट उठाया । उसका नाक अखंड था । यह देखकर उसका पति एकदम चौक गया । उसे अपनी आँखो पर विश्वास नहीं हो रहा था । एक ओर खून की धारा और छूरी को देखा तो दूसरी ओर अपनी पत्नी का अखंड नाक देखा । उसे लगा-मैंने बहुत बडी गल्ती कर दी । यह तो पवित्र सती है, ऐसा मानकर उसने पत्नी के बंधनों को खोला और पैर में पड़कर माफी मांगने लगा । **बिचारा वह क्या जाने अपनी स्त्री के चरित्र को !**

सामने खाट पर लेटा हुआ देवशर्मा संन्यासी सारी घटना को देखकर विचार करने लगा, 'स्त्री के चरित्र को समझना अशक्य है । ये स्त्रियाँ हँसते हुए को हँसकर, रोते हुए को रोकर अप्रिय या क्रूर वाक्य बोलते व्यक्ति को मीठे और प्रिय वचनों से जाल में फँसाती है ।

स्त्रियों की माया बडी कठिन है । बडे बडे विद्वान और शूरवीर भी स्त्रियों की परीक्षा करने में असमर्थ है । स्त्रियाँ अपने मुख से तो मीठी मीठी बाते बोलती है, परंतु हृदय से तो पुरुषों पर आक्रमण ही करती है । स्त्री की वाणी में तो मधुरता और अमृत रहता है, परंतु हृदय में महा भयंकर विष ही भरा है ।

इस प्रकार अपनी धन की चोरी से अर्थ की अनर्थता, स्त्री हृदय की कुटिलता और गिदड की मौत को देखकर विषयों से विरक्त होकर देवशर्मा संन्यासी अपने मठ में चला गया ।

यह दृष्टांत हमे जो प्रेरणा देता है, उसे अपनाकर अपने जीवन में आत्मिक सुख में लीन बनने का प्रयत्न करना चाहिए ।

(क्रमशः)

स्वरूप-मंत्र-नवकार मंत्र

लेखक : **पंडितश्री पनालाल जगजीवनदास गांधी**
हिन्दी अनुवादक : **पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

रुपातीत स्वभाव जे, केवल दंसण नाणी रे,
ते ध्याता निज आतमा, होवे सिद्ध गुणखाणी रे. वीर ।।2।।
ध्याता आचारज भला, महामंत्र शुभ ध्यानी रे,
पंच प्रस्थाने आतमा, आचारज होय प्राणी रे. वीर ।।3।।
तप सज्झायें रत सदा, द्वादश अंगना ज्ञाता रे,
उपाध्याय ते आतमा, जगबंधव जग भ्राता रे. वीर ।।4।।
अप्रमत्त जे नित रहे, नवि हरखे नवि सोचे रे,
साधु सुधा ते आतमा, शु मुंडे शु लोचे रे. वीर ।।5।।
शम संवेगादिक गुणा, क्षय उपशम तस थाय रे,
दर्शन तेहिज आतमा, शु होय नाम धरावे रे. वीर ।।6।।
ज्ञानावर्णी जे कर्म छे, क्षय उपशम तस थाय रे,
तो हुए एहिज आतमा, ज्ञान अबोधता जाय रे. वीर ।।7।।
जाण चारित्र ते आतमा, निज स्वभावमां रमतो रे,
लेश्या शुद्ध अलंकर्यो, मोह वने नही भमतो रे. वीर ।।8।।
इच्छा रोधे संवरी, परिणति समता योगे रे,
तप ते एहीज आतमा, वर्ते निज गुण भोगे रे...वीर ।।9।।

इसके अलावा समकिती देव-देवी का माहात्म्य है, जिसके लिए चौदह पूर्व में से एक पूर्व में निम्नानुसार गाथा है–

गाथा :– ''मम मंगलमरिहंता, सिद्धा साहू सुअं च धम्मो अ ।
सम्मदिट्ठी देवा, दिंतु समाहिं व बोहिं च ।।

यह गाथा बताती है कि जीव को समाधि और बोधि की प्राप्ति के लिए अरिहंत, सिद्ध, आचार्य, उपाध्याय, साधु और श्रुतधर्म जितने सहायक है उतने सभी समकिती देवता भी सहायक है । इन समकिती देवों का जगत् में कौनसा स्थान है ? यह हकीकत इसलिए महत्त्व की है कि इस जगत् में सभी जीवों में सर्वोत्तम ऐसे तीर्थंकर परमात्मा तीर्थंकर नामकर्म के भोग में मुख्यतया देव निमित्त बनते है, इस प्रकार शासनरक्षा और शासन प्रभावना के लिए देवों का स्थान भी इतना ही महत्व का है ।

❑ जैसे अपनी लघुता, सरलता-नम्रता के लिए दासानुदासपना स्वीकारते है, उसी प्रकार देव भी दासानुदासपना स्वीकारते है । नमस्कार महामंत्र के आराधक की यथायोग्य समय पर प्रत्यक्ष और परोक्ष रुप से सहायता करते है । देवों के जीवन में उनकी साधना में ये एक विकास विभाग है, क्योंकि

उनके निकाचित पुण्य के उदय में उनके भोग सुख में श्रावक की तरह वे विरति धर्म का पालन नहीं कर सकते । इसीलिये तो–

समरो मंत्र भलो नवकार, ए छे चौद पूर्व को सार...

जोगी समरे, भोगी समरे, समरे राजा रंक । देवो समरे दानव समरे, समरे सहुनी संग...

इतना ही नहीं परन्तु 150 गाथा के स्तवन में महामहोपाध्याय यशोविजयजी महाराजा ने भी सम्यग्दृष्टि देवों की महिमा का वर्णन किया है ।

समकित दृष्टि सुर तणी, आशातना करशे जेह लाल रे,

बोधि दुर्लभ ते थशे, प्राणीने भाख्यु एह लाल रे...

नमस्कार महामंत्र में नामस्मरण है । अरिहंत और सिद्ध जीव मात्र के स्वरुप नाम है । इन स्वरुप नाम का स्मरण नमस्कार महामंत्र के जाप करने से होता है । उन नामस्मरण की महत्ता महा महोपाध्याय यशोविजयजी महाराजा ने इस प्रकार बताई है ।

नवि मंत्र, नवि यंत्र नवि तंत्र मोटो, जिस्यो नाम ताहरो समामृत लोटो ।

प्रभु नाम मुज तुज अक्षय निधान, धरु चित्त संसार तारक प्रधान ।।

इन पंक्तियों का परम रहस्य क्या है ? मनुष्य योनि में जन्म लेनेवाला जीव चाहे जिस जाति ज्ञाति या क्षेत्र का हो, परन्तु विश्व के किसी भी पदार्थ के अर्थ की जन्म लेते ही जानकारी नहीं होती, परन्तु दूसरे के द्वारा बोले गये शब्द सुनकर प्रथम तो वह बोला गया शब्द पकडता है, ग्रहण करता है, उसके बाद समय की पूर्णता को धारणा में रखे गये शब्द के अर्थ और भाव को प्राप्त करता है । उसी प्रकार हमें भी अपने स्वरुप मंत्र समान पांच पदों के नामों का अत्यन्त रटन पूर्वक जाप करना चाहिये । जिससे हम उसके अर्थ और भाव को प्राप्त कर सके ।

❑ इस प्रकार पंच परमेष्ठी के शब्द उच्चार रुप नाम स्वरुप और जाप का कितना महत्व है, वह जीवन के अनुभव से सभी कोई सरलता से समझ सकते हैं । इसीलिए चार निक्षेपों में सर्व प्रथम नाम निक्षेप को ही प्रथम स्थान दिया है । जगत् में किसी भी धर्म में, किसी भी भाषा में, कितने ही मंत्र हो परन्तु सभी मन्त्रों का रहस्य ये पांच शब्द होने से मन्त्रों की शक्ति और उसका फल प्राप्त होता है क्योंकि पंच परमेष्ठी शब्द रुप मंत्र स्वरूप है, जबकि दूसरे सभी मंत्र उसके अंश और देश रूप है, जैसे ज्ञान स्वरूप कहलाता है और क्रिया देशरुप कहलाती है, इस प्रकार यह मंत्र है । ज्ञान परमार्थ से अविनाशी है, जबकि क्रिया विनाशी है । अविनाशि स्वयंभू होता है जबकि विनाशी, अविनाशी का आधार लेकर ही उत्पन्न होता है और व्यय होता है तब उसी में मिल जाता है ।

❑ पंच परमेष्ठी मंत्र की स्तुति नीचे के श्लोक से की जाती है ।

अर्हन्तो भगवन्त इन्द्र महिता, सिद्धाश्च सिद्धिस्थिता,

आचार्या जिन शासनोन्नति करा: पूज्या उपाध्यायका: ।

श्री सिद्धान्त सुपाठका मुनिवरा:, रत्नत्रयाआराधका:,

पंचैते परमेष्ठिन: प्रतिदिनं, कुर्वन्तु वो मंगलम् ।। (क्रमश:)

प्रेरक कहानियाँ

लेखक : **पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

18. जैसा खावे अन्न-वैसा होवे मन

शर शय्या पर बैठ उपदेश देने वाले भीष्म पितामह को देख द्रौपदी को हंसी आ गई, पितामह ने कारण पूछा तो द्रौपदी ने कहा, **''उपदेश क्या देने के लिए ही है या आचरण के लिए भी हैं ? भरी सभा में दु:शासन के द्वारा मेरे वस्त्र खींचे जाने पर भी आप मौन कैसे रहे ?''**

पितामह ने कहा, 'उस समय मैं दुर्योधन का अन्न खा रहा था, उसके अन्याय पूर्ण अन्न से मेरी बुद्धि मलिन हो गई थी ।...परन्तु अब अर्जुन के बाणों से वह दूषित खून बह गया है, तो अब मैं निर्विकार शुद्ध व शांत हूं ।

19. सम्यग्दृष्टि-देशविरति धर

जमीन पर दो बंदर थे-एक लकवाग्रस्त दूसरा अशक्त !

आम की ऊँची डाल पर आम्र खाते बंदरों को देख दोनों लालायित होते है, परन्तु लकवाग्रस्त तो लाचार है, अत: मात्र ऊपर देखता है ।

अशक्त बंदर कुछ प्रयत्न करता है, परन्तु मध्य की डाल तक ही पहुँच पाता है, फिर भी उसका लक्ष्य आम को पाने का है ।

उपनय– लकवाग्रस्त - सम्यग्दृष्टि
अशक्त - देशविरति धर
आम्रभक्षी - सर्व विरतिधर

20. मान का नशा उतर गया

एक विद्यार्थी अत्यन्त अभिमानी था, अपनी प्रसिद्धि व बुद्धि का उसे अत्यंत अभिमान था, आखिर एक दिन संन्यासी से भेंट हुई । अभिमान से बातें होने लगी । संन्यासी ने मौन रहकर उसकी बातें सुन ली, फिर विश्व का नक्शा मंगाकर, उसमें राष्ट्र का स्थान, फिर राज्य, फिर जिलें का, फिर उसके नगर का स्थान बताया, जो बिंदु मात्र था !

संन्यासी ने कहा, अब तुम्ही बताओं कि इस विराट विश्व में तुम्हारा स्थान कितना है ?

21. अति से हानि

एक बालक को जामफल खाने की अत्यंत आदत ! बार-बार खाता था ! पिता ने अनेक प्रयत्न कियें परन्तु उनकी भी सुने नही ! आखिर पिता ने संन्यासी को बात कही और संन्यासी ने 3 Kg. जामफल मंगाकर बालक को बुलाकर प्रेम से खिलाता गया, आखिर एक अति से बाहर पहुचनें पर उसे तुरन्त जोरदार उल्टी हुई । संन्यासी ने उसे वमन का कारण कहा । वमन के भय से सदा के लिए जामफल छोड़ दियें ।

22. व्यवहार कुशल-सम्यग्दृष्टि

एक वणिक् ने सपत्नी चतुर्थव्रत लिया और व्रतधारी को कंबल की प्रभावना की ! मंत्री पेथड़ शाह को भी भेंट की परन्तु व्रताभाव के कारण उसका उपभोग कैसे करे ? अत: प्रतिदिन Showcase में रख उसे नमस्कार करता है ।

पत्नी ने पूछा, **'इसका उपयोग क्यों नहीं करते ?'**

पेथड़शाह ने कहा, **'इसका अधिकारी तो चतुर्थ व्रतधारी है ।'**

पत्नी, **'तो हम भी व्रत ग्रहण कर लेंवे ।'**

पत्नी की इच्छा जान पेथड़शाह ने मात्र 32 वर्ष की जवानी में ब्रह्मचर्य व्रत स्वीकार दिया ।

23. शासन रक्षार्थ बलिदान

अजयपाल राजा का जैन मंत्री कपर्दी ! भाल पर तिलक ! राजा ने आज्ञा की, **'तिलक साफ करों अन्यथा जीवन साफ हो जायेगा ।'** रात्रि में जैन संघ की मिटिंग ! बलिदान का निर्णय !

दूसरें ही दिन **''जैनं जयति शासनं''** के गगन भेदी नारों से निकले युवानों में से 21 व्यक्तियों ने तिलक रक्षार्थ अजयपाल की आज्ञा से धगधगायमान तेल की कढाई में गिरकर आत्म-बलिदान दे दिया ।

24. कैसी नि:स्पृहता

गुरु रामदास भिक्षा के लिए निकले और बडे मकान के पास पहुँचे ! घर के मालिक के पास भोजन की सामग्री न होने से शिवाजी ने एक पर्चे के ऊपर **'गुरुदेव ! मैं आपको यह राज्य समर्पित करता हूँ, मुझ से आपका भिक्षा मांगना देखा नहीं जाता !'**

रामदास ने कहा, **'साधु और राज्य ये तो दोनों विपरीत ध्रुव है ।'**

शिवाजी ने कहा, **'दान दी वस्तु पर अब मेरा अधिकार नहीं है ।'**

रामदास-अब मेरी दूसरी आज्ञा सुनो मुझे राज्य संचालन के लिए योग्य प्रतिनिधि चाहिये, मैं तुम्हें इस हेतु नियुक्त करता हूँ ।

(क्रमश:)

लोढाधाम उपधान तप के आराधक

प्रथम उपधान

1) मीनाबेन जशवन्तराजजी भण्डारी बोरीवली-सोजत सिटी
2) चंद्राबेन नगराजजी छाजेड़ बोरीवली-दुठारिया
3) सिद्धेश पकंजजी रांका चिंचवड-सादडी
4) प्रविणा ललितजी सिरोया थाणा-बाली
5) रणजीतजी पुखराजजी राठोड़ बोरीवली-बाली
6) नीरु महेन्द्रजी भण्डारी बोरीवली-सोजत सिटी
7) मीता हरेशभाई जैन बोरीवली-लुनावा
8) नगीना नेमीचंदजी सुराणा बोरीवली-वालराई
9) नीशा सुमीतजी मेहता मुम्बई-पिंडवाडा
10) ललितभाई जुगराजजी राणावत देहीसर- खुडाला
11) ज्योति दिनेशजी कामदार मुम्बई कोट
12) पीस्ताबेन अशोकजी राठोड़ गोरेगांव बाली
13) कमलाबेन गोटीलालजी कोठारी बोरीवली-फतेपूर
14) हेतल चिराग जैन मुम्बई-बीजापूर
15) रंजन धनपतजी बलडोटा भांडुप -सादडी
16) कामिनी अमृतजी बलडोटा भांडप -सादडी
17) मंजूला जयंतिलालजी कोठारी जोगेश्वरी-दुजाना
18) उगमराजजी शेषमलजी नवलखा वसई-देसुरी
19) सरोज ललितजी मण्डलेशा जोगेश्वरी-मुण्डारा
20) देवीबेन सुरेशजी कारसिया बोरीवली-बेडा
21) सुशीलाबेन जगदीश सोलंकी भायंदर -बिजोवा
22) रेखाबेन प्रदीपजी पुनमिया जोगेश्वरी-कोसेलाव
23) संगीताबेन कीर्तिकुमार जैन सुरत-सादडी
24) चन्द्राबेन प्रकाशजी धोका बोरीवली-रानी स्टेशन
25) प्रदीपजी नीमसोलंकी भायंदर-लुनावा
26) पूर्णिमा प्रदीपजी जैन भायंदर-लुनावा
27) नीलम देवेशजी मेहता सुरत-पालनपूर
28) क्रिया देवेशजी मेहता सुरत-पालनपूर
29) पारसमलजी रिखबचंदजी जैन मुम्बई-तखतगढ़
30) शीतलबेन कौशीकजी शाह मलाड़-पालनपूर
31) रेणुका दक्षांशजी परमार भिलाड़-घाणेराव
32) आयान भावेशजी जैन भायंदर-बिजापूर
33) टिमोन भावेशजी जैन भायंदर-बिजापूर
34) ईनलबेन नितेशजी जैन थाणे-नाडोल
35) मीनाबेन रमेशजी मण्डलेशा जोगेश्वरी-मुण्डारा
36) रविन्द्र हस्तीमलजी राजावत गोरेगांव-घाणेराव

दुसरा उपधान

1) गोटीलालजी कोठारी भायंदर
2) इन्द्रिरा कांतिलाल जैन थाणा
3) शांतीबेन जयंतिलालजी भण्साली जोगेश्वरी
4) संतोषबेन पारसमलजी भंडारी बोरीवली
5) मीना विमलजी सुराणा चरई, थाणे
6) पुष्पाबेन प्रकाशजी मेहता थाणा
7) पीस्ताबेन नरेन्द्र शाह हुबली
8) पुष्पाबेन किरणराजजी मेहता भाइंदर
9) पीना राजेश कोठारी मीरा रोड
10) ताराबेन जीवराजजी जैन थाणे

तीसरा उपधान

1) शंकरलालजी सोमतमलजी सेठ मुम्बई
2) माणकचंदजी कोचर मुम्बई

अढारिया

1) राहुलभाई पोपटलालजी शाह येरवड़ा पूना
2) मयंक करण शाह नालासोपारा
3) पक्षाल विनोदजी चोपड़ा भायंदर
4) भव्य ललितजी मेहता थाणे (वे.)

शासन-प्रभावना के समाचार

मरुधर रत्न, जैन हिन्दी साहित्य दिवाकर, पूज्यपाद **आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** आदि ठाणा-5 की श्री भद्रंकर परिवार द्वारा लोढा धाम में आयोजित सामुहिक उपधान तप की मंगल पूर्णाहुति के बाद आगामी चातुर्मास पोसालिया–राजस्थान की ओर विहार यात्रा प्रारंभ हुई ।

दि. 7 फरवरी को 9 कि.मी. विहार करके दिगंबर मंदिर-चिंचोटी पधारे ।

दि. 8 फरवरी को 13 कि.मी. विहार करके जीवदया धाम पधारे ।

दि. 9 फरवरी को 11 कि.मी. विहार करके नाकोडा धाम पधारे । आज **पू.आ. श्री कलापूर्णसूरीश्वरजी म.सा.** के शिष्य **पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय कीर्तिचन्द्रसूरीश्वरजी म.सा.** आदि ठाणा-5 के साथ स्नेह मिलन हुआ ।

दि. 10 फरवरी को 13 कि.मी. विहार कर नागेश्वर धाम पधारे ।

दि. 11 फरवरी को 9 कि.मी. विहार कर सूर्योदय धाम पधारे । आज **पूज्य पंन्यास प्रवर श्री भद्रंकरविजयजी** के प्रप्रशिष्य **पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय जयधर्मसूरीश्वरजी म.सा.** आदि ठाणा-4 के साथ स्नेह मिलन हुआ ।

दि. 12 फरवरी को 17 कि.मी. विहार कर चारोटी नाका पधारे ।

दि. 13 फरवरी को 17 कि.मी. विहार कर पारस वडलो पधारे ।

दि. 14 फरवरी को 8 कि.मी. विहार कर तलासरी पधारे । श्री मल्लीनाथ जैन तीर्थ धाम की **25 वीं ध्वजारोहण** निमित्त प्रात: 9.00 बजे से मंदिर में अठारह अभिषेक का विधान हुआ । संगीतकार-सागरभाई मुरबाड ने सुंदर विधि विधान के साथ भक्ति संगीत प्रस्तुत किया । पूज्यश्री की निश्रा में अठारह अभिषेक का विधान हुआ ।

दि. 15 फरवरी को प्रात: 9.00 बजे मंदिरजी में सत्रह भेदी पूजा प्रारंभ हुई । नौवीं ध्वजा पूजा के बाद लाभार्थी परिवार **डॉ. मनीषाबेन निमेषभाई पाटण** आदि ने मंदिरजी के शिखरों पर **25 वीं ध्वजा** चढाई । ध्वजारोहण निमित्त पूज्यश्री ने शिखर पर चढकर वासक्षेप किया । अंत में उपस्थित सभी श्रद्धालुओं को बडीशांति श्रवण कराकर मंगल किया । दोनों दिन दोपहर 3.30 **बजे पूज्यश्री एवं मु.श्री स्थूलभद्रविजयजी** का गुजराती भाषा में प्रेरणादायी प्रवचन हुआ ।

दि. 16 फरवरी को 14 कि.मी. विहार कर नंदिग्राम जैन तीर्थ में पधारे । आज महाराष्ट्र प्रदेश में विचरण के लगभग 25 महिनों के बाद पूज्यश्री ने गुजरात प्रदेश में मंगल प्रवेश किया ।

दि. 17 फरवरी को 7 कि.मी. विहार करके सरीगाम पधारे । श्री कुंथुनाथ जैन संघ-सरीगाम वालों ने गाजते-बाजते पूज्यश्री का भावभरा हार्दिक स्वागत किया । जिनालय दर्शन के बाद व्याख्यान हॉल में पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । श्री संघ की हार्दिक विनति का स्वीकार कर सरीगाम में तीन दिन तक पूज्यश्री की स्थिरता रही । तीनों दिन प्रात: 8.30 बजे पूज्यश्री के प्रेरणादायी प्रवचन हुए एवं सामुहिक रुप से 10 रुपये की प्रभावना हुई ।

दि. 20 फरवरी को 2 कि.मी. विहार करके भिलाड पधारे । श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन संघ-भिलाड द्वारा दीक्षा के बाद प्रथम बार मुनि श्री महापुण्यविजयजी के आगमन निमित्त गाजते-बाजते पूज्यश्री का भावभरा हार्दिक स्वागत किया । बीच मार्ग में नीतिनभाई फूलचंदजी

राणावत के गृहांगण में पूज्यश्री के पगले हुए । जिनालय दर्शन के बाद प्रवचन होल में पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद फूलचंदजी राणावत की ओर से श्री संघ की नवकारशी हुई ।

दि. 21 फरवरी को प्रात: 7.30 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । फिर नूतन मुनिराज श्री महापुण्य विजयजी के सांसारिक परिवार श्रीमती पूजाबेन जितेन्द्रभाई परमार के गृहांगण में श्री विमलनाथ भगवान के परिकर की अंजनशलाका प्रतिष्ठा निमित्त गृहमंदिर में कुंभ स्थापना, दीपक स्थापना संक्षिप्त पाटला पूजन एवं अठारह अभिषेक के विधि विधान हुए । फिर प्रात: 10.40 के शुभ मुहूर्त में पूज्यश्री ने परिवार की अंजन विधि संपन्न की । विधिकारक प्रींसभाई-मुंबई ने मंगल विधि विधान करवाए । पूज्यश्री ने प्रासंगिक प्रवचन किया । कार्यक्रम के बाद परमार परिवार की ओर से संघ स्वामि वात्सल्य रखा गया ।

दि. 22 फरवरी को श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनालय भिलाड से श्री कलिकाल कल्पतरु शामला पार्श्वनाथ जिनालय-करंबेला हेतु चैत्य परिपाटी का आयोजन हुआ । प्रात: 6.00 बजे जिनालय दर्शन के बाद गाजते-बाजते श्री संघ के साथ प्रयाण हुआ । मार्ग में भरतभाई चुन्निलालजी कितावत परिवार के गृहांगण में पूज्यश्री के पगले एवं 50 रु. का संघपूजन हुआ । फिर 7.30 बजे करंबेला में प्रवेश हुआ । जिनालय दर्शन के बाद कितावत परिवार की ओर से श्री संघ की नवकारशी हुई ।

48 वाँ दीक्षा दिन

आज **पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.** का **48 वें दीक्षा दिन** निमित्त बाली निवासी **मातुश्री सुमतिबाई चुन्निलालजी कितावत परिवार** की ओर से **'गुरु गुण कीर्तन'** का संगीतमय कार्यक्रम हुआ । प्रात: 9.00 बजे कार्यक्रम का प्रारंभ हुआ । मंगलाचरण के बाद पूना से पधारे प्रितमभाई ओसवाल ने पूज्यश्री का जीवन परिचय दिया । सुरत से पधारे संगीतकार स्नेहलभाई ने सुमधुर संगीत प्रस्तुत किया । फिर नूतनमुनिराज **श्री महापुण्यविजयजी म.सा.** ने अपने गुरुदेव के प्रति स्वयं के आकर्षण का कारण उनकी चारित्र के प्रति प्रतिबद्धता, ममता और वात्सल्य भाव आदि गुणों का वर्णन कर गुणानु मोदना की । फिर चंपकभाई नरोली ने पूज्यश्री के प्रति शुभ कामना प्रस्तुत करते हुए वक्तव्य दिया ।

फिर बालमुनिराज **श्री विमलपुण्यविजयजी म.सा.** ने पूज्यश्री के जीवन के नित्यतप, समय प्रतिबद्धता एवं गुरु समर्पण भाव के गुणों को बताकर गुणानुमोदना की । फिर कार्यक्रम के लाभार्थी कितावत परिवार ने पूज्यश्री का गुरुपूजन करके कामली अर्पण की । फिर **मुनिराज श्री स्थूलभद्रविजयजी म.सा.**ने पूज्यश्री के स्वाध्याय प्रेम एवं स्वाध्याय से होनेवाली सर्वाधिक कर्मनिजरा का वर्णन किया । फिर **मुनिश्री शालिभद्र-विजयजी म.सा.** ने पूज्यश्री के वैराग्य का कारण ब्रह्मचर्य एवं दीक्षा स्वीकार आदि प्रसंग बताए ।

तत्पश्चात् पूज्यश्री द्वारा विवेचित **'चौथा कर्मग्रंथ'** पुस्तक की दूसरी आवृत्ति का भव्य विमोचन धनसुखभाई, भरतभाई-कितावत, ललितभाई-दहिसर, रमेशभाई-अमदाबाद, अभिजीतभाई-उरली देवाची पूणे आदि ने किया । अंत में पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद श्री संघ ने पूज्यश्री पर अक्षत वधामणा किये । कार्यक्रम के बाद उरुली देवाची जैन संघ की ओर से 100 रुपये तथा कितावत परिवार की ओर से 20 रु की प्रभावना की गई । कार्यक्रम के बाद मंदिरजी में सत्रह भेदी पूजा पढाई गई । दोपहर 12.39 के विजय मुहूर्त में श्री शामला पार्श्वनाथ भगवान के जिनालय के शिखर पर **32 वीं ध्वजा चढाई** गई । ध्वजारोहण के बाद पूज्यश्री ने बडी शांति का मंगल श्रवण करवाया । पधारे हुए सभी महानुभावों की साधर्मिक भक्ति हुई ।

शाम 5.00 बजे 7 कि.मी. विहार करके महावीर नगर-वापी पधारे ।

दि. 23 फरवरी को 13 कि.मी. विहार करके श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन तीर्थ-उदवाडा पधारे ।

दि. 24 फरवरी को 13 कि.मी. विहार करके रत्नाकर धाम-वलसाड पधारे । आज **पूज्य आ.श्री नेमिसूरीश्वरजी म.सा.** समुदाय के **पूज्य आ.श्री राजहंसूरीश्वरजी म.सा.** से स्नेह मिलन हुआ । शाम को 4 कि.मी. विहार करके जयदीप सिरामिक्स-धरमपुर चोकडी पधारे ।

दि. 25 फरवरी को 13 कि.मी. विहार कर मणि कल्याण विहारधाम-डोंगरी पधारे । शाम को 6 कि.मी. विहार करके RMD आयुर्वेदिक केन्सर होस्पिटल विहार धाम **वागलधरा** पधारे । वहा विराजमान **पू. आ. श्री ॐकारसूरीश्वरजी म.सा.** के समुदाय के उपाध्याय **श्री मोक्षेशविजयजी म.** आदि के साथ मिलन हुआ ।

दि. 26 फरवरी को 8 कि.मी. विहार कर श्री चन्द्रप्रभस्वामी जैन संघ-चिखली पधारे । यहा **बालमुनि श्री विमलपुण्यविजयजी** के सांसारिक बडे पापा-शा. भवरलालजी भूरचंदजी कंकुचोपडा-जीवाणा के गृहांगण में पूज्यश्री के पगले हुए । प्रात: 8.30 बजे पूज्यश्री का प्रेरणादायी प्रवचन हुआ । प्रवचन के बाद सामुहिक रुप से 60 रुपये की प्रभावना हुई । शाम को 4 कि.मी. विहार करके श्री गोडी पार्श्वनाथ जैन तीर्थ-आलीपोर पधारे ।

दि. 26 फरवरी को 8 कि.मी. विहार कर विहारधाम अष्टगांव में पधारे । आज **पू.आचार्यदेव श्री ॐकारसूरि म.सा.** समुदाय के **पूज्य मुनिश्री ज्ञानसारविजयजी म.सा.** आदि ठाणा-4 से स्नेह मिलन हुआ । शाम को 4 कि.मी. विहार कर गौशाला में पधारे ।

दि. 28 फरवरी को 8 कि.मी. विहार कर तपोवन संस्कार धाम-नवसारी पधारे । आज **पू.पं. श्री चन्द्र-शेखरविजयजी म.सा.** के प्रशिष्य **मुनि श्री कीर्तिघोषविजयजी म.सा.** से स्नेह मिलन हुआ । शाम को 8 कि.मी. विहार कर श्री संभवनाथ जैन-वेश्मा पधारे ।

दि. 29 फरवरी को 14 कि.मी. विहार कर श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जैन तीर्थ-बलेश्वर पधारे ।

दि. 1 मार्च को 16 कि.मी. विहार कर दादा भगवान-कामरेज पधारे । शाम को 6 कि.मी. विहार कर मानवमंदिर सेवा ट्रस्ट में पधारे ।

मरुधर रत्न **पू. आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.**

आदि-5 ठाणा का ***आगामी कार्यक्रम***

दि. 22 मार्च बाद	अमदाबाद से राजस्थान की ओर विहार
दि. 15 अप्रेल से	कैलाशनगर (जिला-सिरोही) पू.आ. श्री मनमोहनसूरिजी म.सा.
दि. 26 अप्रेल	के संयम जीवन के **50 वें वर्ष** में मंगल प्रवेश निमित्त चैत्री ओली एवं भव्य महोत्सव
लगभग **8 मई**	पिंडवाडा में वर्षीतप पारणे एवं जिनमंदिर की ध्वजाएं । फिर वीरवाडा एवं पेसुआ आदि में ध्वजा निमित्त महोत्सव ।
दि. 17 जुलाई 2024	**बुधवार-पोसालिया (राज.) में चातुर्मास हेतु नगर प्रवेश ।**

संपर्क सूत्र : सहदेव M. 9867204942

प्रवचन-मोती

प्रवचनकार : पूज्य आचार्यदेव श्रीमद् विजय रत्नसेनसूरीश्वरजी म.सा.

1781. समता भाव से मृत्यु प्राप्त करना समाधि मृत्यु है।

1782. देह को छोडते हुए मन में जरा भी दुर्ध्यान न करना समाधि मृत्यु है ।

1783. जैसे तलवार, म्यान में रहते हुए भी म्यान और तलवार अलग है, वैसे ही शरीर और आत्मा अलग है ।

1784. बाहर की परिस्थिति चाहे जैसी हो, मन की प्रसन्नता ही समाधि है ।

1785. जैसे जन्म के साथ मृत्यु है, वैसे ही संयोग के साथ वियोग जुडा हुआ है ।

1786. पुण्य जब तक सलामत है, तब तक ही सत्ता, संपत्ति और शक्ति अपनी हैं । पुण्य ने जिस दिन विदाई ले ली उस दिन भरे बाजार में हम निलाम हो जाएगे ।

1787. शरीर के साथ जैसे छाया चलती है, वैसे ही मृत्यु भी चलती है ।

1788. जो मृत्यु के बाद भी साथ ले जाना है ऐसे सत्कर्मों की कमाई कितनी ? और जो यही रखना है, ऐसी वस्तु की कमाई कितनी ?

1789. यहां से जाते समय यही मानना है कि ये संयोग मात्र पंखी मेला है ।

1790. मैं अकेला हूँ, अकेला आया हूँ और अकेला ही जाऊंगा । इन भावों में रहने से समाधि की प्राप्ति हो सकेंगी ।

1791. व्यक्ति जितना झुकता है, उतना पाता है ।

1792. देव और गुरु के पास से कुछ पाना हो तो नमस्कार जरुरी है ।

1793. पर की निंदा पाप है, स्व के दुष्कृतों की निंदा आत्मस्नान है । पुण्य पूंज को खडा करने के लिए सुकृतों की अनुमोदना करे ।

1794. इस जीवन में परम गति की प्राप्ति न हो तो सद्गति तो प्राप्त कर ही सकते है ।

1795. इस रजोहरण को प्राप्त करके भी अनेक आत्माओं ने अपना भव भ्रमण बढाया है, क्योंकि जो वफादारी रजोहरण के प्रति जरुरी थी, वह नहीं रखी ।

1796. जैसे लोक व्यवहार में भी भाव की कीमत है वैसे ही धर्म क्षेत्र में भी भाव की कीमत है ।

1797. हमारे राग का पात्र जड पदार्थ और द्वेष का पात्र जीव पदार्थ है ।
जड के राग को तोडने के लिए अनित्यादि 6 भावनाएँ बताई है और
जीव के द्वेष को तोडने के लिए मैत्री आदि 4 भावनाएँ बताई है ।

1798. जब घर में पराया व्यक्ति घुस जाता है, तब वह हमारे घर की संपत्ति का विनाश करता है । हमारे आत्मा रुपी घर में अनादि काल से पराये व्यक्ति समान कर्म घुसे है, जो हमारे आत्मिक गुणों का नाश करते है ।

1799. भाव कर्म रुपी कषायों के कारण ही द्रव्य कर्म का संयोग आत्मा के साथ में होता है ।

(क्रमशः)

RNI No. MAHHIN/2000/00860 • Postal Reg. No. MCS/125/2024-26 • WPP License No. MR/TECH/WPP-285/South/2024-26
Posted at Patrika Channel STG Office Mumbai-1 • Date of Pub. 12 Day of every month • Posting Date 15th of every month

॥ श्री पोसली पार्श्वनाथाय नमः ॥

॥ श्रीमद् प्रेम-रामचन्द्र-भद्रंकर-महोदय-पुण्यपाल-वज्रसेन-हेमभूषणसूरिभ्यो नमः ॥

108 पार्श्वनाथ में सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक तीर्थ भूमि

पोसालिया-राजस्थान की धन्यधरा पर

श्री जैन पोसली पार्श्वनाथ श्वेतांबर ट्रस्ट

श्री पोसालिया जैन संघ के अंतर्गत आयोजित

ई.सं.2024 के चातुर्मास में द्विमासिक आराधना एवं सामुदायिक उपधान तप की आराधना

निमित्त भावभरा हार्दिक निमंत्रण...पधारो सा.

शुभ निश्रा

मरुधर रत्न, गोडवाड के गौरव, जैन हिन्दी सहित्य दिवाकर

पूज्यपाद आचार्यदेव श्रीमद् विजय **रत्नसेनसूरीश्वरजी** म.सा. आदि साधु-साध्वी गण

गुरुभगवंतों का चातुर्मास प्रवेश बुधवार, दि. 17-07-2024 को शुभ मुहूर्त में होगा ।

द्विमासिक-चातुर्मास आराधना

- फोर्म भरकर जमा कराने का अंतिम दि. 15-4-2024
- सम्मति प्राप्त होने पर दि. 19-7-2024 तक पधारे ।
- समापन बुधवार, दि. 18-9-2024
- आराधकों को प्रतिदिन एकासना अनिवार्य है । उपवास आदि तप के पारणे में बियासने छुट रहेगी ।

सामुदायिक उपधान तप

- फॉर्म भरकर जमा कराने का अंतिम दि. 15-9-2024
- प्रथम प्रवेश-गुरुवार दि. 17-10-2024
- द्वितीय प्रवेश-शनिवार दि. 19-10-2024
- मोक्ष माला-शुक्रवार दि. 6-12-2024
- उपधान उपकरणों की किट एवं आने-जाने का किराया (2nd Class) भेट दिया जाएगा ।

फार्म प्राप्ति एवं भरकर लौटाने का स्थल :- 1) **ललितभाई मुनिमजी**-जैन पेढी पोसालिया M.9351111805 2) **जितेन्द्र परमार**-मेग्नम टॉवर, चिवडा गली, लालबाग, मुंबई M.9844043970 3) **रवी सिरोहिया**-फुलचंद ज्वेलर्स,स्टेशन रोड, कल्याण M.9819294200 4) **संजय मुथा**-झंकार, 536, शनिवार पेठ, प्रभात टॉकिज सामने, पूणे M.9822022766 5) **पंकज परमार**-महावीर पेठ, कर्जत M.8446674005 6) **शांतिलाल सिरोहिया**-161, गोविन्दप्पा नायक स्ट्रीट,एवी.सी.प्लाजा, ऑफिस नं.15, चैन्नइ M. 9840259390 7) सहदेव-M.9867204942 8) चेतनभाई मेहता-M.9867058940 9) ललितभाई राठोड-M.9820303451

To,

If undelivered please return to : DIVYA SANDESH PRAKASHAN
Office No.304, 3rd floor, Bay Vue Building, Wing--East Bay,
Dr.M.B.Velkar Street,Kalbadevi, Mumbai-400002.

From :

Published and Printed by : SURENDRA JAIN on behalf of
DIVYA SANDESH PRAKASHAN
Printed at : SOMANI PRINTING PRESS, Gala No. 3-4,
Amin Ind. Estate, Sonawal Cross Road No. 2, Goregaon (E),
Mumbai-400 063. and Published from : Office No.304, 3rd floor,
Bay Vue Building, Wing--East Bay, Dr.M.B.Velkar
Street,Kalbadevi, Mumbai-400002. EDITOR:SURENDRA JAIN